Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बन्धों में शिक्षा का प्रभाव

Nirmal Chand Pandey[1]* Dr. Ashih Yadav[2]

[1] Research Scholar, Department of Sociology, Swami Vivekanand University, Sagar (M.P.)

[2] Associate Professor, Department of Sociology

सारांश – ***शोध क्षेत्र के 62.25 प्रतिशत नागरिकों का यह मानना है कि शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं। तथा 16.00 प्रतिशत नागरिकों का यह मानना है कि शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में सकारात्मक परिवर्तन नहीं आये हैं। जबकि शोध क्षेत्र के 21.75 प्रतिशत नागरिकों को शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में आये परिवर्तनों के सम्बंध में कुछ नहीं पता है। शोध क्षेत्र के 59.00 प्रतिशत समाजसेवियों का यह मानना है कि शिक्षा के परिणाम स्वरूव समाज के जीवन व्यवहार एवं सामाजिक सम्बन्धों में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं। तथा 15.50 प्रतिशत समाजसेवियों का यह मानना है कि शिक्षा के परिणामस्वरूप परिवर्तन नहीं आये हैं। जबकि शोध क्षेत्र के 25.50 प्रतिशत समाजसेवियों को शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में आये परिवर्तनों के सम्बंध में कुछ नहीं पता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा के प्रभाव से समाज के जीवन व्यवहार एवं सामाजिक सम्बन्धों में सकारात्मक परिवर्तन आये है।***

----------X----------

प्रस्तावना:

जब तक भारत पर विदेशी नियंत्रण रहा तब तक यह देश अन्य देशों की अपेक्षा उन्नति की दौड़ में पिछड़ा ही रहा। पर अब परिस्थितियाँ बदल गई हैं तथा हमारे समाज में अनेक सामाजिक परिवर्तन हुए हैं, जाति-भेद की दीवारें टूटी हैं, उच्च वर्ग के लोग अब निम्न वर्ग के लोगों में विवाह करने लगे हैं, नारियों को पुरूषों के समान अधिकार मिल गये हैं, पुराने विचारों, रीति-रिवाजों तथा संस्कारों में भी परिवर्तन हो रहा है एवं आदिवासी जातियाँ भी अब असभ्यता के अंधकार से दूर हटती जा रही हैं। परन्तु ध्यान देने की बात यह है, कि इतना सब कुछ होने का तात्पर्य यह नहीं है, कि भारतीय समाज अब दोषरहित है। हमारा समाज अब भी बहुत सी बातों में पिछड़ा हुआ है। जिसका मुख्य कारण शिक्षा तथा नैतिक मूल्यों का अभाव है। परिणामस्वरूप यहाँ पर आये दिन जातीयता, प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता तथा भाषा के आधार पर विभिन्न वर्गों में घोर संघर्ष होता रहता है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक मात्र साधन है। शिक्षा समाज की आवश्यकताओं को पूरा करती है तथा ऐसे विचारों का प्रसार करती है, जिनके द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपनेक प्रकार के परिवर्तन होते रहे हैं। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। हमारे समाज में सत्य, अहिंसा, सहानुभूति, सहिष्णुता, सहयोग तथा सौहार्द आदि अनेक शाश्वत मूल्य पाये जाते हैं, शिक्षा इन शाश्वत मूल्यों की रक्षा करती है और सामाजिक परिवर्तन के बुरे प्रभाव से इन्हें बचाती है। शिक्षा समाज में भौतिक तथा अभौतिक प्रविधियों का प्रचार-प्रसार करती है कि लोग वांछित परिवर्तनों को सरलतापूर्वक ग्रहण कर लें। शिक्षा भावी पीढ़ी को संस्कृति का हस्तान्तरण करके समाज में स्थायित्व एवं निरन्तरता लाती है। यही नहीं शिक्षा समाज को नाना प्रकार के सुधार तथा परिवर्तनों के लिए प्रेरित करती है। इस दृष्टि से शिक्षा सामाजिक परिवर्तनों की जन्मदाता, प्रवर्तक तथा निर्देशक है एवं एक अविनाशी शक्ति के साथ-साथ रचनात्मक शक्ति भी है। शिक्षा जनतंत्रीय भावनाओं को विकसित करके व्यक्ति के अन्दर ऐसी शक्तियों का विकास करती है, जिनके आधार पर वह सामाजिक कुरीतियों में आवश्यक परिवर्तन लाकर एक उत्तम जीवन व्यतीत करने लगता है। दूसरे शब्दों में शिक्षा व्यक्ति को वांछनीय सामाजिक परिवर्तन का नेतृत्व करना सिखाती है। यह मानवीय तथा सामाजिक सम्बन्धों को बनाये रखने में सहायता करती है। शोधार्थी का मुख्य उद्देश्य समाज के जीवन-व्यवहार एवं

सामाजिक सम्बन्धों में शिक्षा के प्रभाव की वास्तविक स्थिति का अध्यन करना है।

शोध विधि एवं शोध उपकरण:

शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन हेतु इलाहाबाद जिले के सभी बीसों विकासखण्डों - बहादुरपुर, बहरिया, चाका, धनुपुर, हण्डिया, होलागढ़, जसरा, करछना, कौड़िहार, कौंधियारा, कोरॉव, माण्डा, मऊआइमा, मेजा, फूलपुर, प्रतापपुर, सैदाबाद, शंकरगढ़, सोरॉव एवं उरूवा में से प्रत्येक विकासखण्ड से 20-20 सामान्य नागरिकों, कुल 400 नागरिकों तथा 10-10 समाजसेवियों, कुल 200 समाजसेवियों, को विस्तृत शोध सर्वेक्षण हेतु न्यादर्श में चयनित किया गया है। शोधार्थी द्वारा सभी न्यादर्शों का चयन दैव-निदर्शन विधि से किया गया है।

इलाहाबाद जिले में शिक्षा के प्रभाव से समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बन्धों में आये परिवर्तनों की वास्तविक स्थिति के अध्ययन हेतु शोधार्थी ने 'सर्वेक्षण विधि', 'अवलोकन विधि' एवं 'अभिलेख अध्ययन' विधि का प्रयोग किया है तथा शोध उपकरण के रूप में स्व-निर्मित 'समाजसेवी साक्षात्कार अनुसूची' तथा 'सामान्य नागरिक साक्षात्कार अनुसूची' आदि का प्रयोग किया गया है तथा शोध उपकरणों के माध्यम से संकलित प्रदत्तों के सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या द्वारा वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त की, जिनका विवरण निम्नानुसार है -

तालिका क्रमांक - 1

शिक्षा के परिणाम स्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बन्धों में आये परिवर्तनों का अध्ययन

(आधार - नागरिक साक्षात्कार अनुसूची)

क्र0	विकासखण्डों के नाम	न्यादर्श में चयनित नागरिकों की संख्या	शिक्षा के परिणामरूवरूप समाज के जीवन–व्यवहार एवं सामाजिक सम्बन्धों में					
			सकारात्मक परिवर्तन आये हैं		सकारात्मक परिवर्तन नहीं आये हैं		कुछ नहीं पता	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	बहादुरपुर	20	14	70.00	02	10.00	04	20.00
2.	बहरिया	20	10	50.00	04	20.00	06	30.00
3.	चाका	20	12	60.00	03	15.00	05	25.00
4.	धनुपुर	20	11	55.00	04	20.00	05	**25.00**
5.	हण्डिया	20	15	75.00	02	10.00	03	15.00
6.	होलागढ़	20	13	65.00	03	15.00	04	20.00
7.	जसरा	20	14	70.00	02	10.00	04	20.00
8.	करछना	20	11	55.00	03	15.00	06	30.00
9.	कौड़िहार	20	14	70.00	03	**15.00**	03	15.00
10.	कौंधियारा	20	12	60.00	03	15.00	05	15.00
11.	कोरॉव	20	10	50.00	04	**20.00**	06	30.00
12.	माण्डा	20	14	70.00	03	15.00	03	15.00
13.	मऊआइमा	20	13	65.00	03	15.00	04	20.00
14.	मेजा	20	12	60.00	03	15.00	05	25.00
15.	फूलपुर	20	14	70.00	04	20.00	02	10.00
16.	प्रतापपुर	20	10	50.00	04	20.00	06	30.00
17.	सैदाबाद	20	14	70.00	03	15.00	03	15.00
18.	शंकरगढ़	20	12	60.00	04	20.00	04	20.00
19.	सोरॉव	20	11	55.00	04	20.00	05	25.00
20.	उरूवा	20	13	65.00	03	15.00	04	20.00
	योग	**400**	**249**	**62.25**	**64**	**16.00**	**87**	**21.75**

विश्लेषण एवं व्याख्या (तालिका क्रमांक- 1)

उपरोक्त तालिका क्रमांक 1 में शोध क्षेत्र इलाहाबाद जिले के न्यादर्श में चयनित नागरिकों से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में आये परिवर्तनों सम्बंधी जानकारी हेतु प्रदत्तों का संकलन किया गया है।

उपरोक्त तालिका क्रमांक 1 के आँकड़े यह दर्शाते हैं कि शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित कुल 400 नागरिकों में से 249 नागरिकों का यह मानना है कि शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं। तथा 64 नागरिकों का यह मानना है कि शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में सकारात्मक परिवर्तन नहीं आये हैं। जबकि 87 नागरिकों को शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में परिवर्तनों के सम्बंध में कुछ नहीं पता है। इस प्रकार शोध क्षेत्र के 62.25 प्रतिशत नागरिकों का यह मानना है कि शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं तथा 16.00 प्रतिशत नागरिकों का यह मानना है कि शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में सकारात्मक परिवर्तन नहीं आये हैं। जबकि शोध क्षेत्र के 21.75 प्रतिशत नागरिकों को शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में आये परिवर्तनों के सम्बंध में कुछ नहीं पता है।

तालिका क्रमांक - 2

शिक्षा के परिणाम स्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बन्धों में आये परिवर्तनों का अध्ययन

(आधार - समाजसेवी साक्षात्कार अनुसूची)

www.ignited.in

क्र0	विकासखण्डों के नाम	न्यादर्श में चयनित समाजसेवियों की संख्या	शिक्षा के परिणामरूवरूप समाज के जीवन–व्यवहार एवं सामाजिक सम्बन्धों में					
			सकारात्मक परिवर्तन आये हैं		सकारात्मक परिवर्तन नहीं आये हैं		कुछ नहीं पता	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	बहादुरपुर	10	06	60.00	02	20.00	02	20.00
2.	बहरिया	10	05	50.00	02	20.00	03	30.00
3.	चाका	10	07	70.00	01	10.00	02	20.00
4.	धनुपुर	10	05	50.00	02	20.00	03	**30.00**
5.	हण्डिया	10	06	60.00	02	20.00	02	20.00
6.	होलागढ़	10	06	60.00	02	20.00	02	20.00
7.	जसरा	10	05	50.00	01	10.00	04	40.00
8.	करछना	10	07	70.00	01	10.00	02	20.00
9.	कौड़िहार	10	06	60.00	01	**10.00**	03	30.00
10.	कौंधियारा	10	05	50.00	02	20.00	03	30.00
11.	कोरॉव	10	07	70.00	01	**10.00**	02	20.00
12.	माण्डा	10	06	60.00	02	20.00	02	20.00
13.	मऊआइमा	10	07	70.00	01	10.00	02	20.00
14.	मेजा	10	06	60.00	02	20.00	02	20.00
15.	फूलपुर	10	05	50.00	01	10.00	04	40.00
16.	प्रतापपुर	10	07	70.00	01	10.00	02	20.00
17.	सैदाबाद	10	05	50.00	02	20.00	03	30.00
18.	शंकरगढ़	10	06	60.00	01	10.00	03	30.00
19.	सोरॉव	10	06	60.00	02	20.00	02	20.00
20.	उरुवा	10	05	50.00	02	20.00	03	30.00
	योग	**200**	**118**	**59.00**	**31**	**15.50**	**51**	**25.50**

विश्लेषण एवं व्याख्या (तालिका क्रमांक- 2)

उपरोक्त तालिका क्रमांक में शोध क्षेत्र इलाहाबाद जिले के न्यादर्श में चयनित समाजसेवियों से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में आये परिवर्तनों की जानकारी हेतु प्रदत्तों का संकलन किया गया है।

उपरोक्त तालिका क्रमांक 2 के आँकड़े यह दर्शाते हैं कि शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित कुल 200 समाजसेवियों में से 118 समाजसेवियों का यह मानना है कि शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं। तथा 31 समाजसेवियों का यह मानना है कि शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में सकारात्मक परिवर्तन नहीं आये हैं। जबकि 51 समाजसेवियों को शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में परिवर्तनों के सम्बन्धों में कुछ नहीं पता। इस प्रकार शोध क्षेत्र के 59.00 प्रतिशत समाजसेवियों का यह मानना है कि शिक्षा के परिणाम स्वरूव समाज के जीवन व्यवहार एवं सामाजिक सम्बन्धों में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं। तथा 15.50 प्रतिशत समाजसेवियों का यह मानना है कि शिक्षा के परिणामस्वरूप परिवर्तन नहीं आये हैं। जबकि शोध क्षेत्र के 25.50 प्रतिशत समाजसेवियों को शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में आये परिवर्तनों के सम्बंध में कुछ नहीं पता है।

निष्कर्ष:

तालिका क्रमांक 1 व 2 के विश्लेषण एवं व्याख्या से यह तथ्योद्घाटान होता है कि शोध क्षेत्र के 62.25 प्रतिशत नागरिकों का यह मानना है कि शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं। तथा 16.00 प्रतिशत नागरिकों का यह मानना है कि शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में सकारात्मक परिवर्तन नहीं आये हैं। जबकि शोध क्षेत्र के 21.75 प्रतिशत नागरिकों को शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में आये परिवर्तनों के सम्बंध में कुछ नहीं पता है। शोध क्षेत्र के 59.00 प्रतिशत समाजसेवियों का यह मानना है कि शिक्षा के परिणाम स्वरूव समाज के जीवन व्यवहार एवं सामाजिक सम्बन्धों में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं। तथा 15.50 प्रतिशत समाजसेवियों का यह मानना है कि शिक्षा के परिणामस्वरूप परिवर्तन नहीं आये हैं। जबकि शोध क्षेत्र के 25.50 प्रतिशत समाजसेवियों को शिक्षा के परिणामस्वरूप समाज के जीवन-व्यवहार एवं सामाजिक सम्बंधों में आये परिवर्तनों के सम्बंध में कुछ नहीं पता है। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा के प्रभाव से समाज के जीवन व्यवहार एवं सामाजिक सम्बन्धों में सकारात्मक परिवर्तन आये है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

कपिल, एच0के0 (1987) अनुसंधान विधियाँ, हर प्रसाद भार्गव, प्रकाशन, आगरा।

पाठक, पी.डी. (2007) भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

प्रिया, नीरज (2006)- शिक्षक सामाजिक परिवर्तन का अभिकर्ता ? भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी. ई. आर. टी. वर्ष 24, अंक-3, पृष्ठ - 15-26।

बसु, दुर्गादास (1997) - भारत का संविधान एक परिचय, सातवां संस्करण, प्रेंटिस हाल आफ इंडिया, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

मिश्र गिरीश्वर (2017) शिक्षा के साथ बंद हो मजाक, दैनिक जागरण, आगरा, गुरूवार 8 जून, 2017।

दुबे, श्यामाचरण, (1994) - शिक्षा समाज और भविष्यः राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रा. लि. नई दिल्ली।

रूहेला, सत्यपाल (1992) - भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र, चतुर्थ संस्करण, राजस्थान, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।

राय पारसनाथ (2004) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल आगरा।

Corresponding Author

Nirmal Chand Pandey*

Research Scholar, Department of Sociology, Swami Vivekanand University, Sagar (M.P.)